

TAITT. UP. 1, 4, 1. चन्द्रमाः सर्वविकारकोषः BHĀG. P. 2, 1, 34. हृदयं जीव-  
कोशं पञ्चात्मकम् 4, 22, 26. — h) Vorrathskammer, Vorrath; Schatzkam-  
mer, Schatz: प्रकृत्या किमकोषाद्यः (किमवान्) R. 3, 22, 9. धान्यकोषश्च यः  
कश्चिद्धनकोषश्च मामकः । तौ राममनुगच्छेता वसन्तं निर्जने वने ॥ 2, 36, 7.  
रत्नकोषनिचये: N. (Bopp) 26, 19. प्राज्ञस्य क्षीनबुद्धेश्च कर्मकोशः क्व तिष्ठति  
MBh. 3, 12631. (ब्राह्मणः) ईश्वरः सर्वभूतानां धर्मकोषस्य गुप्तये M. 1, 99.  
(निधेः) तस्माद्विज्ञेभ्यो द्वायार्धमर्थं कोषे प्रवेशयेत् 8, 38. कोषमेव च श्रवेतेत  
राज्ञा 419. नृपतौ कोषराष्ट्रे (आयते) 7, 65. कोषदण्डौ 9, 294. कोषक्षीन  
(पार्थिव) 7, 148. कोषापकृतर 9, 275. MBh. 3, 14704. संचायित्वा पुनः को-  
षम् 13, 3079. कोषस्य निचये पत्नं कुर्वीथाः 13, 205. वर्धयत्तश्च धर्मेण को-  
षमूलं महीयते: R. 1, 7, 7. कश्चिद्वलेषु कोषेषु मित्रेषु च — कुशलं ते Viçv.  
2, 9. DRAUP. 4, 11. तृतीयां निशेषविश्राणितकोशज्ञातम् RAGH. 3, 1. अथ तेन  
सुवर्णेन वृद्धकोषो ऽचिरेण सः । बभूव KATHĀS. 3, 24. क्षीणकोशः RĀGĀ-TAR.  
5, 165. पीतकोशः 421. कोषगणन 237. प्रज्ञानं पालनं शस्यं स्वर्गकोशस्य  
वर्धनम् PĀNĀT. I, 248. Am Ende eines adj. comp. f. आ KATHĀS. 13, 103.  
कोष = भाण्डागार ein Gemach, in dem das Hausgeräthe aufbewahrt  
wird, H. 995. = अर्थाय, अर्थयय, अर्थसंघात AK. 3, 4, 29, 223. H. an. 2,  
547. MED. c. 5. sh. 10. = हेमद्वयं कृताकृतम् verarbeitetes und unver-  
arbeitetes Gold und Silber AK. 2, 9, 91. H. 1045. Vgl. कोशगृह. — i)  
eine best. Form des Verbandes: कोशमङ्गुष्ठाङ्गुलिपर्वम् विदध्यात् Suçr.  
1, 65, 17, 19; vgl. कोशबन्ध 2, 20, 14. — k) (Wörterbehälter) Wörterbuch  
MED. Sch. zu ÇĀK. 3, 6. Vgl. अमरकोष u. s. w. — l) Knospe, Blumen-  
kelch AK. 3, 4, 29, 223. H. an. MED. विभिन्नकोशैः — नवकन्दलैः RAGH.  
13, 29. दत्तकोशाः (vgl. कुञ्जलदत्त unter कुञ्जल und कुञ्जलदत्ती) 5, 72.  
Häufig in Verbindung mit पद्म, पङ्कज oder कमल, in welchem Falle  
aber nicht immer die Knospe, der Blumenkelch des Lotus, sondern auch  
ein Samenbehälter der Lotusblume gemeint ist. चरणी तस्याः पद्मकोश-  
समप्रौढा R. 2, 60, 18. 3, 52, 34. स्तनद्वयम् — तिरश्चकार — मुञ्जातयोः पङ्क-  
जकोशयोः श्रियम् RAGH. 3, 8. विकचकमलकोषश्रीः DHŪRTAS. 92, 6. स पद्म-  
कोषः (BURNOUR: tige d'un lotus) सकृदोदतिष्ठत कालेन कर्मप्रतिबोधनेन ।  
स्वेराचिषा तत्सलिलं विशालं विद्योतयन्नर्क इवात्मयोर्यानि ॥ BHĀG. P. 3,  
8, 14. यो वा अयं द्वीपः कुवलयकमलकोशाभ्यन्तर्कोशः 5, 16, 5. तान्यञ्ज-  
लिसकृष्णाणि समानीतानि नागैः । अकोषाणीव पद्मानि दर्शयन् भूतप्राज्ञः ॥  
R. 6, 111, 46. In den beiden letzten Beispielen sind offenbar die Samen-  
behälter der Blume gemeint. — m) Schote (शिम्बा) H. an. die Schale  
der Nüsse: नारिकेलफलं यद्वत्सकोषं वृद्धिमृच्छति MĀRK. P. 11, 6. — n)  
Muskatnuss H. an. MED. Vgl. ज्ञातीकोश. — o) das Innere der Frucht  
von Artocarpus integrifolia u. s. w. (पनसादिफलस्यान्तः) DHAR. im  
ÇKDR. — p) Cocon: निजलालासमायोगात्कोषं वा कोशकारकः (यथा क-  
रोति) JĀGĀ. 3, 147. कोशवदाच्छादकत्वात् VEDĀNTAS. 19. Vgl. कोशकार,  
कोशकारक. — q) Uterus: गर्भकोषपरामर्शः Suçr. 1, 120, 12. नारिकेलफलं  
यद्वत्सकोषं वृद्धिमृच्छति । तद्वत्प्रयात्यसौ वृद्धिं सकोषो so ist zu lesen:  
der Fötus mit dem Uterus) ऽधोमुखः स्थितः ॥ MĀRK. P. 11, 6. = योनि  
H. an. the vulva, the womb; the penis WILS. — r) Hodensack, du. die  
beiden Abtheilungen desselben: वृषणयोः श्रययुं कोशयोश्चापादयति Suçr.  
1, 290, 4. 2, 112, 20. 352, 13. वस्तिकोशः 5. Vollständig फलकोश (s. d.). —  
s) Ei AK. 2, 5, 37. H. 1319. H. an. MED. In dieser Bed. ist uns das Wort  
nur in Verbindung mit अण्ड (das Ei mit seiner Hülle) vorgekommen

und zwar BHĀG. P. 2, 8, 16. 3, 20, 15. Nach den Lexicographen (s. u. अ-  
ण्डकोष) bedeutet das comp. Hode. अण्डकोष BHĀG. P. 2, 1, 25 ist adj.  
von अण्डकोष und bed. im Ei enthalten: अण्डकोषे शरीरे ऽस्मिन्. —  
t) im VEDĀNTA bildet आनन्दमयः कोशः das Gehäuse der Freude — den  
ursächlichen Körper (कारणशरीर), विज्ञानमयः (बुद्धिमयः), मनोमयः und  
प्राणमयः कोशः das Gehäuse der Erkenntniß, des Willens und des Le-  
bens — den feinen Körper (सूक्ष्मशरीर), धन्ममयः कोशः das Gehäuse  
der Ernährung — den groben Körper (स्थूलशरीर) VEDĀNTAS. 19. 29. 30.  
32. 33. 39. COLEBR. Misc. Ess. I, 372. fg. Ind. St. 1, 301. — u) am Ende  
eines comp. Kugel, Kugelform: सूत्रकोष ein Knauel Garn, नेत्रकोष Aug-  
apfel SVĀMİN zu AK. im ÇKDR. पद्मान्यशोकपुष्पाणि दृष्ट्वा दृष्टिर्विक्रान्ते ।  
सीताया नेत्रकोषाभ्यां सदृशानीव R. 3, 79, 28. In solcher Verbindung des  
Wortes hat man wohl zunächst an einen Cocon gedacht. — v) das beim  
Gottesurtheil angewandte Weihwasser Z. d. d. m. G. 9, 675. fgg. JĀGĀ.  
2, 95. Vielleicht daher so benannt, weil das Weihwasser, in welchem,  
bevor davon getrunken ward, Götter gebadet wurden, in einem Eimer  
enthalten war. AK. 3, 4, 29, 223. H. an. MED.: कोष = दिव्य. कोषग्रहण  
undergoing an ordeal WILS. — w) Eid: ततो नित्यं चरणं रक्ताक्ते  
नेषचर्मणि । कोषं चक्रतुरन्योऽन्यं सखेद्वा नृपडामरी ॥ RĀGĀ-TAR. 5, 325.  
— 2) f. कोशा N. pr. eines Flusses VP. 184. Vgl. मरुकोशी. — 3) f.  
कोशी a) Knospe: अर्ककोशौ ÇAT. Br. 10, 3, 4, 3. 5. — b) (Samen-) Be-  
hälter: पद्मवीजकोशी AK. 3, 4, 1, 16. — c) Blattaue H. 1124. — d) Schuh  
HĀR. 74. ÇABDAR. im ÇKDR. — Das Wort scheint mit कुन्ति und कोष्ठ  
verwandt zu sein und liesse sich auf die übrigens nicht belegte Wurzel  
कुप् umschliessen zurückführen. NĪR. 5, 26 wird कोश mit कुप् in Ver-  
bindung gebracht. — Vgl. अंसत्रकोश, अण्ड, अन्तः, अद्विकोष, इन्द्र,  
देवकोश, महा.

कोशक (= कोश) m. Ei; Hode ÇABDAR. im ÇKDR. उद्वकोषक n.  
Uterus MĀRK. P. 11, 5. — Vgl. अण्डकोषक.

कोशकार (कोश + 1. कार) 1) m. Verfertiger von Degenscheiden, Kisten  
u. s. w.: पत्नं कोषकाराणां तिमिरं कनकाकारम् R. 4, 40, 26 (Schol.:  
कोषं खड्गविशेषम् [sic] यद्वा कोषं स्वर्णादियात्रम्; vgl. कोशिकार). f. ई  
VS. 30, 14. — 2) m. Verfasser eines Wörterbuchs ÇKDR. — 3) m. Sei-  
denraupe HĀR. 216. ÇATĀDB. im ÇKDR. कोशकार इवात्मानं कर्मणाच्छाद्य  
मुक्षति BHĀG. P. 6, 1, 52. कोषकारश्च कोषेये कृते वस्त्रे ऽभिज्ञायते MĀRK.  
P. 15, 27. कोशकारकीट VJUTP. 117. a chrysalis or pupa WILS. — 4)  
eine Art Zuckerrohr, m. VĀĀSP. zu H. 1194. RĀGĀV. im ÇKDR. Suçr. 1,  
187, 6. n. 2, 439, 12. Nach ÇABDAR. im ÇKDR. Zuckerrohr überh.

कोशकारक (कोश + का) m. Seidenraupe JĀGĀ. 3, 147 (vgl. unter  
कोश 1, p.)

कोशकृत् (कोश + कृत्) m. eine Art Zuckerrohr Suçr. 1, 186, 16. —  
Vgl. कोशकार.

कोशगृह (कोश + गृह) n. Schatzkammer, ein Gemach in dem kostbare  
Gewänder, Schmucksachen u. s. w. aufbewahrt werden: वासोसि च म-  
रुकाणि भूषणानि वराणि च । वर्षाण्येतानि संख्याय वैदेह्याः निप्रमानय ॥  
नेन्द्रेणैवमुक्तस्तु गत्वा कोशगृहं ततः । प्रायच्छत्तिप्रमादकृत्य सीतयै म-  
र्वमेव तत् ॥ R. 2, 39, 16. fg. RAGH. 5, 29.

कोशचक्षु (कोश + चक्षु) m. der indische Kranich (सारस) ÇABDAR. im ÇKDR.